Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Ind. 7

13. C. 72.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Vijaya-dohāvalī

Bijai Doohawali

विजय दोहावली

بجے دوہاولی

जिसको

श्री गोसाईं तुलसीदास जीने अपनी तुलसीकृत रामायण के कठिन और गुह्यार्थ दोहे, चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त पूर्व्वोक्त छन्दों में

प्रकाशित किया

वही

सब हरिभक्त रामायणानुरागियों के चित्तानन्द प्रकाशार्थ के अर्थ

दूसरी बार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

फ़रवरी सन् १८८३ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् फ़रवरी सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों को और भी सस्ती मिलेंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	३- वन पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	**नाटक**
महाभारत	४- विराट पर्व्व	सातों काण्ड	प्रबोध चन्द्रोदय
१- पहिले हिस्सा में	५- उद्योग पर्व्व	१- बालकाण्ड	रामाभिषेक
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	२- अयोध्याकाण्ड	आनन्द रघुनन्दन
वन पर्व्व	७- द्रोण पर्व्व	३- आरण्य काण्ड	हनु नाटक
२- दूसरे हिस्सा में	८- कर्ण पर्व्व	४- किष्किन्धाकांड	भ्रमजाल नाटक
विराट् पर्व्व उद्योग पर्व्व	९- शल्य पर्व्व व	५- सुन्दर काण्ड	**वेदान्त**
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	गदा पर्व्व सौप्तिक प-	६- लङ्का काण्ड	योग वाशिष्ठ
३- तीसरे हिस्सा में	र्व्व मय ऐषीक व	७- उत्तर काण्ड	आनन्दामृत वर्षिणी
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	विशोक स्त्री पर्व्व	रामायण शब्दार्थ को-	सांख्य तत्त्व कौमुदी
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	१०- शान्ति पर्व्व राज	रामायण का इतिहास	**काव्य**
ऐषीक पर्व्व विशोक	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व	रामायण मानसदीपिका	सूरसागर
पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति	दान धर्म्म	रामायण कवितावली	कृष्ण सागर
पर्व्व में राजधर्म्म आप-	११- अश्वमेध आ-	रामायण गीतावली स-	विश्राम सागर
द्धर्म्म मोक्षधर्म्म	श्रम वासिक मुशल	विनयपत्रिका वा०मो०	प्रेमसागर
४- चौथे हिस्सा में	पर्व्व महा प्रस्थान	विनयपत्रिका वा०शि०	ब्रजविलास बड़ा
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	स्वर्गा रोहण	विष्णु पुराण भाषा	ब्रजविलास छोटा
अश्वमेध आश्रम वा-	१२- हरिवंश पर्व्व	लिंग पुराण भाषा	रसिकप्रिया
सिक पर्व्व व मौसल	रामायण रामविलास	प्रश्नोत्तर खण्ड	अनेकार्थ
पर्व्व व महा प्रस्थान	रामायण तुलसीकृत	शुक्रनीति	छन्दोर्णव पिङ्गल
स्वर्गा रोहण पर्व्व ह-	रामायण सटीक मय	रसदृष्टि व रसचन्द्रोदय	रसराज
रिवंश पर्व्व	मानस दीपिका कोष	सुदामा चरित्र	सतसई मूल व सटीक
महाभारत पर्व्व अ-	आदि	कृष्णागीतावली	सभा बिलास
लेहदा भी हैं	तथा जिल्दबन्धी	श्री अनुराग रस	तुलसी शब्दार्थ प्र०
१- आदि पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	सौदागर लीला	भजनावली
२- सभा पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	विजय मुक्तावली	प्रेमरत्न
			युगल विलास

श्रीगणेशायनमः ॥

विजयदोहावली ॥

दो० सोरहसै पैंतीस को सम्बत है सुखरास ॥
रामविजयदोहावली बरणी तुलसीदास १
विजयराम दोहावली जानैं जे नर कोइ ॥
गुप्त अर्थ रामायणौ प्रगट कीजिये सोइ २
सो० मूक होहि बाचाल पंगुचढ़ै गिरिवर गहन।
दो० नहीं मेघके कण्ठगति नहींअरुनके पाइ ॥
बासकरैं आकाशमें रविरथ चढ़िगयेधाइ ३
चौ० नाम रूप दुइ ईश उपाधी।
अकथ अनादि सोसमुझहिं साधी ॥
दो० नाम जपति शङ्करथके शेष न पायो पार ॥
सबप्रकारसोअकथहै महिमाअगमअपार ४
चौ० भाव कुभाव अनख आलसहू।
राम जपति मङ्गल दश दिशहू ॥
दो० भावसहितशङ्करजप्यो कहिकुभावमुनिबाल ॥
कुंभकरणआलसजप्यो अनखजप्योदशभाल ५
छं० दुइदंडभरिब्रह्माण्डभीतर कामकृतकौतुकअयं ॥
दो० उभय घरी सुरलोक में ब्रह्मलोक द्वै दण्ड ॥

रह्यो भुवनमेंदिवसनिशि ब्याप्योमदनप्रचंड ६
सो० धरा न काहूधीर सबके मन मनसिज हरे॥
जे राखे रघुबीर ते उबरे वहि कालमें॥
छ० हनूमानपुनिबच्यो हरलक्ष्मणजलखंड्यो।
स्वामिकार्त्तिकबच्यो मोरबाहनधरविंड्यो॥
लोमसमुनिपुनिबच्यो जासुकेनिकटनधस्यो।
तुलसीश्रोरघुनाथबल मदनसोइनकहँनहिंडस्यो ७
चौ० एक बेर कुबेर पर धावा।
पुष्पकयान जीतिलैआवा॥
दो० कीन्ह यज्ञजब रघुनृपति दीन्हों अद्भुत दान॥
यांच्योआय कुबेर तब दीन्हो पुहुप बिमान ८
गुणसमस्त बहुसमुझिकै जानलीन्ह परसंध॥
सो वर आद्रीजाइकै छीन लीन्ह दशकन्ध ९
कीन्ही अरज कुबेरतब सुनौ अवध अवनीश॥
आपनदीनी दक्षिणा छीनलीन्ह दशशीश १०
कीन्ह क्रोधतब रघुनृपति दशहू शर संधान॥
ठाढ़भये सोइ कोट पर हरौं दशौके प्रान ११
तब ब्रह्मा समुझाइयो सुनौ अवध अवनीश॥
रामहाथ ये शर चलैं तब मरिहैं दशशीश १२
सुनिब्रह्माके बचनतब धरिराख्यो महिपाल॥
रामसो ह्वैहैं बंशमें तब हनिहैं दशभाल १३
सकलकथाअवनीशतब लिखिराखीयहिवान॥
दीजो फेर कुबेर को महादान अनुमान १४

चौ० निज दुख सुख सब गुरुहि सुनाये।
कहि वशिष्ठ बहु बिधि समुझाये॥
दो० पूरबही बरजोमिल्यो रह्योअंधऋषि शाप॥
तुलसी गुरुहि सुनाइयो देवन को संताप १५
चौ० अवधपुरी सोहै इहि भांती।
प्रभुहि मिलन आई जनु राती॥
दो० दिवसरहौ रसबीचमें निशासो मंदिर माहिं॥
है सुरपति की अप्सरा शाप रह्यो उरमाहिं १६
द्वैकन्या गँधर्व की शोभा प्रभा रु हेम॥
तुलसी ते स्यानी भई चाहैं यों मन प्रेम १७
एक समय कैलास को गईसो दोनों बैन॥
सेवाकर जब शंभुकी शापभयो तबऐन १८
तब हेमांत्र अरु सोप्रभा ठाढ़ि भई करजोर॥
जब महेश उपदेश किय जाइ रहो मगओर १९
केशरि कुंकुम अरगजा अष्टादशा कपूर॥
रही भूपके भवन में यहि सुगंध भरपूर २०
चौ० कौशल्या जब बोलन जाहीं।
ठुमुक ठुमुक प्रभु चलहिं पराहीं॥
दो० कौशल्या प्रभु करगहे मगन प्रेम भरपूर॥
लैआई भूपति ढिगहि पोंदन लागी धूर २१
चौ० गौर किशोर वेष बर काछे।
कर शर चाप राम के पाछे॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता।

सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दो० अवधपुरी ब्याही हती जनकपुरी की आइ ॥
जाति तमोलिनकी रहै पान देन नितजाइ २२

चौ० जनक भुवन की शोभा जैसी।
गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥

दो० आदि सखी जे सियाकी संगलीन्ह अवतार ॥
आदि सखा जे विष्णुके अवधपुरी ब्यवहार २३

चौ० कहत कथा इतिहास पुरानी।
रुचिर रजनि युग याम सिरानी ॥

दो० गईयामिनी यामयुग तबकर परसन कीन्ह ॥
धन्यभामिनी गुरुजननि रामभंत्र ग्वहिंदीन्ह २४

चौ० नव पल्लव भर सुमन सुहाये।
निज संपति सुर रूख लजाये ॥

दो० ये बिरवा कैलास के और सकल सुरसाग ॥
औरहु सकल सुमेरु के धरे भूप निज बाग २५

चौ० तिहि अवसर सीता तहँ आई।
गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥

दो० जान समय तब मातने सियापठइ तिहिठौर ॥
संग सखी चातुर चली पूजनको गणगौर २६

चौ० सर समीप गिरिजागृह सोहा।
बरणि न जाय देखि मन मोहा ॥

दो० रह्यो भूपके बागमें शुभ आश्रम बहु जान ॥
सीता केरो आवनो देवी को बरदान २७

चौ० कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि।
कहत लषण सों रामहृदय गुनि॥
दो० कही अनुजसों सबकथा कालकला अनुसार॥
यहिमहिमा कछुममनहीं जनकललीविस्तार २८
चौ० एक सखी सिय संग बिहाई।
गई रहै देखन फुलवाई॥
दो० नामसुशीला अनुचरी निपुणनीति गुणधाम॥
सियाको संग बिहाय कै गई रहै जहँराम २९
चौ० विनय प्रेमबश भई भवानी।
खसीमाल मूरति मुसक्यानी॥
दो० अर्द्धंगी जो देवता अरु गिरि नंदिनि जानि॥
बामअंग माला धरी तब मूरति मुसक्यानि ३०
रमा रुक्मिणी राधिका तुम्हरे बहुतक नाव॥
सुरत करत गोलोककी ताते छुवत न पाव ३१
चौ० घटै बढ़ै बिरहिनि दुख दाई।
ग्रसैराहु निज संधिहि पाई॥
दो० नृप दधीच राजा हते कन्या साठि हज़ार॥
अष्टोतरसै सोमको ब्याही हती कुमार ३२
पति अभावसों बाल सब आईं पितुके गेह॥
तब नृपके मनमें भयो देखतही संदेह ३३
तब कन्यन सों नृपति ने पूछी बारहि बार॥
कौन काज आई इहाँ कहो सुसत्य बिचार ३४
पिताक्रोध मनसमुझिकै कहिकन्यन यहबात॥

पतिने त्यागी जब हमैं त्य हिते आई तात ३५
राजा रघुने सुनतही चन्द्रहि पकरि बुलाइ॥
भयदैकै कन्या दई गयो सो तुरत लेवाय ३६
कछुदिन राख्योप्रेमसों फिरिअभाव स्वइकीन्ह॥
पतिपरित्याग बिचारिकै देहभस्म तिनकीन्ह ३७
राजा रघुने जब सुनी कन्यन तजे शरीर॥
तब द्वैगया पैदाकिये सुनहु गरुड़ मतिधीर ३८
तिनसों नृपने याकही करहु सो बेग उपाय॥
सोरहु कला समेत तुम चन्द्रहि लीलौ जाय ३९
चंद्र लीलि जबहींलियो सोरहु कला समेत॥
तब नृपसों बिनती करी देवन आय निकेत ४०
महाराज समरत्थ हौ यह बर मांगे देहु॥
चंद्रहि देउ उबेल कै यहि जगमें यश लेहु ४१
शुक्लपक्ष परिवा लगे पंद्रह तिथिलों सोइ॥
कलनकलन बहु चंद्रको उगिलतहैं गयादोय ४२
कृष्णपक्ष याही बिधि लीलि चंद्रको लेइ॥
घटतबढ़त तुलसीकहो यहिप्रकार बिधिसोइ ४३
सो० शंकर चाप जहाज सागर रघुबर बाहुबल॥
बूड़ी सकल समाज प्रथम चढ़े जे मोहबश॥
दो० तीन लाखमन अस्थिको बनो पनच असरार॥
गजबेली रोदालगो गोसा लगे हजार ४४
जे अभिमानी नृपतिहैं नहिं बिचार कछुचित्त॥
तिन्हको बल पौरुष महा बूड़ो जानो मित्त ४५

सीता मन अनुमानकर कच बांसुड़ी बजाय ॥
मोहे बिधिके बाहनै राग मनोहर गाय ४६

चौ० बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं ।
कबहुँ न असरिस कीन्हगोसाईं ॥

दो० दशहजार वे शिशु हते गधर्बनके पुत्र ॥
तिनकी धनुहीं छीनिकै तोरी हती सुमित्र ४७

चौ० राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने ।
कहि कछु लषण बहुरि मुसक्याने ॥

दो० प्रभुचितये मुसक्यायकै बैठरहे कहुं अन्त ॥
लषन बतायो भृगुपतिहि चारि नारिको कंत ४८

चौ० हँसत देख नखशिख रिस ब्यापी ।
राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥

दो० यह कुजाति है जनमको डसत प्राण हरिलेत ॥
ऐसे पापी अधमको राम संग तुम लेत ४६
तुमसे पापी हम नहीं बधी न अपनी माइ ॥
तुलसी ते जगमें फिरौ मुहुलग सबहि बताइ ५०

चौ० देव एक गुण धनुष हमारे ॥
नौगुण परम पुनीत तुम्हारे ॥

श्लो० ऋजुस्तपस्वीसंतोषी क्षमासत्यजितेन्द्रियः ॥
दाताशूरदयालुश्च ब्राह्मणानवभिर्गुणैः ५१

दो० राम कहो भृगुनाथसों धनुष हमारो देहु ॥
नौगुण अपनी जातिके सो तुम अपने लेहु ५२

चौ० बिप्र बंशकी यह प्रभुताई ।

अभय होय सो तुमहिं डराई ॥

दो० राम कहा भृगुनाथ सों कहअसि नायो माथ ॥
अभय होय तुमको डरै धरै चरणपर हाथ ५३

चौ० राम रमा पति करधनु लेहू।
खैंचहु चाप मिटहि सन्देहू ॥

दो० आदिशक्ति तुम आदिहो माया अपरम्पार ॥
हौद्विज हो प्रभु आसहौ देत अशीष अपार ५४
जयजयजय भ्रातासहित जयरघुबंश कुमार ॥
परशुराम तब बनगये दईअशीष अपार ५५

चौ० सोह नबल तन सुन्दर सारी।
जगत जननि अतुलित छबि भारी ॥

दो० चन्द्रभानु बहु किरनकी धूर कपूर समान ॥
जगत जननिके उरलसै सोसारी परवान ५६
तीनलोक शोभालसै जाके पगकी धूर ॥
जगत जननिके तनलसै सोसारी भरपूर ५७

चौ० पहिंचानौ तौकहौं सुभाऊ।
प्रेमबिबश पुनि पुनि कहराऊ ॥

दो० प्रथमसुयशकहुरामको पुनिकहुलषणसुभाव ॥
दूत निकट बैठारिकै पुनि पुनि पूछत राव ५८

चौ० राम लषणकी कर बर चीठी।
रहगये कहत न खाटीमीठी ॥

दो० श्रवन बधेको पापहै दीन्ह अन्धऋषि शाप ॥
सोदशरथ बाहिर रहे जनक न निवते आप ५९

स्वयं ब्रह्म अवतरे जहँ सबविधि पूरण आप ॥
तुलसी विनय विदेहकी चूक पाछिलीमाफ ६०

चौ० आवत जानि भानुकुल केतू ।
सरितन जनक बँधाये सेतू ॥

दो० जेठ दशहरा शुभगदिन मेघबरष भवहेतु ॥
आईं सरित अपार मिलि जनक बँधाये सेतु ६१

चौ० महा भीर भूपति के द्वारे ।
रज होइजात पषान पँवारे ॥

दो० लागी भूपति भवनमें सुंठी यकसै एक ॥
महाभीर राजत जहाँ पूरण धूर अनेक ६२
लगनशोध ब्रह्मादई राम लषण के कर्म ॥
सोई शोधी जनकपुर आदिशक्तिके धर्म ६३
प्रथमहिं जेठे जनकहैं लहुरेहैं कुशकेतु ॥
तिनके कन्या तीनहैं रहेदुरामै हेतु ६४
प्रथमहिं जेठीसरसुती पूरब योगन जान ॥
दूजीरहै शिरोमणी तीजी सुलोचन नाम ६५

चौ० शुक सारिका जानकी जिवाये ।
कनक पींजरन राखि पढ़ाये ॥

दो० कहै सुवा सुनु सारिका यहि भूपतिकोअंग ॥
टोरै चाप बिवाहु है संत कहौं परसंग ६६
तब सीता पकराइयो सुवा सारिका दोय ॥
वालमीकि के आश्रमहिं कथा सुनायो सोय ६७

चौ० तब ब्रह्मा धरणी समुझावा ।

अभय भई भरोस तब आवा ॥

दो० सुनि ब्रह्माके बचनमहि तबमनकीन्ह बिचार ॥
द्वापर दीन्हों पाछे त्रेता कियो अगार ६८

चौ० राम कथा सुंदर करतारी ।
संशय विहँग उड़ावन हारी ॥

दो० एक समय वहु बधिकगा लेन चिरइया सोइ ॥
तुलसी ताको देखिकै आश्रम त्यागो दोइ ६९

चौ० ऐसी पीर विहँसि उर गोई ।
चोर नारि जिमि प्रगट न रोई ॥

दो० भुजा चीन्हि रघुनाथ के कहे केकयी बैन ॥
जो चाहो सो लेहु सुत खोलि देउ द्वउ नैन ७०
भरतहि गद्दी दीजिये मोहिं तपो धनराज ॥
अहोमात बरदान यह होइ सकल सुरकाज ७१
देहु मात बरदान इहि तुमहिं न व्यापै पीर ॥
राम बचन चोरी करी रोई रानि अधीर ७२

चौ० समाचार सब लक्ष्मण पाये ।
व्याकुल बदन बिलखि उठिधाये ॥

दो० भ्राता जेठे बन चले तात संग तुम जाइ ॥
रानीखबर सुनाइयो लषण सुव्याकुलधाइ ७३

चौ० गुरु पितु मात न जानों काहू ।
कहों सुभाव नाथ पतियाहू ॥

दो० रहौं तात पाताल में धरे सकल महिभार ॥
नाथ कृपा तुव तन धर्‌यो महिमा देख विचार ७४

महीं रहौं बैकुंठ में धरे पवन की ओट॥
साधनहितजो तनधरौंगिरिजिमितृणकीओट ७५
बारेते हिय हेतुहै राम सिया सँग जात॥
मेघनाद को मारबो काज न दूसर तात ७६
सो० सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
विहँसे करुणाअयन चितै जानकी लषणतन॥
दो० भोरहोत नृप ने कही श्याम चिरइया लेन॥
अबना मिलै तौ जातमैं सागर प्राणहिं देन ७७
नारद को संकट परो चले बुलावन आप॥
बीचपंथमें विधिमिले तिहिकहि निजसंताप ७८
स्वंभूमनुको बरदियो कियोउचित उपदेश॥
तुव केवट गृह होइँगे मोहै अवध नरेश ७९
तातवचन अरुमातहित आनमिल्यो तवदेश॥
तेरे साखी संगहै आदि शक्ति अरु शेश ८०
आदिशक्ति अरु शेषकी ब्रह्मदई जबसाखि॥
बारबार शिरनायकै चलौ हृदयमें राखि ८१
चौ० पुनि कछु लषण कही कटुबानी।
बरजि राम बड़ अनुचित जानी॥
दो० नहीं रामनहिं लषणकछु नहिंकौशला सुमित्र॥
नृपकै रानी केकयी भरत शत्रुहन पुत्र ८२
चौ० सुनि सुमित्र सिय शीतल बानी।
भयेविकल जिमि फणिमणिहानी॥
दो० सियउतारि गहनोदयो औचक कह्यो सँदेश॥

तुलसी आगम समुझिकै रहो न भिल्लनदेश ८३
सो सुमित्र बाँध्यो तबै राम रजायसुपाइ॥
दशरथ आगे जा धर्‌यो धुनैशीश पछिताइ ८४
चौ० राम चले बन प्राण न जाहीं।
क्यहि सुखलागि रहे तनमाहीं॥
दो० कहि आये का कहतहौ कहा क्षेत्र कह देह॥
अब कछु ऐसी करचलौ रघुबर चरण सनेह ८५
चौ० तिहि औसर इक तापस आवा।
तेज पुंज लघु वेष सुहावा॥
दो० चित्रकूट अस श्रवण सुनि यमुनतीर भगवान।
वयकिशोर बटु रूप धरि लैनगयो अगवान ८६
चौ० सुनि स्वरूप बूझहिं कुशलाई।
अब लगि गये कहाँ लगभाई॥
दो० ग्रामत्रिया छबि देखिकै सुखसुंदर दोउवीर॥
पूंछै एकहि एकसों भयसुनि सकलअधीर ८७
चौ० प्रभु पद रेख बीच बिच सीता।
धरहिंचरण मगचलहिं सभीता॥
दो० भ्रमितचित्त मारगचलैं व्याकुलीक मिटिजाय॥
तुलसीप्रभु महिमा अमित दोईपायँ दुराय ८८
चौ० राम सिया पद अंक बचाये।
लषणचलहिं मग दाहिनबाँये॥
दो० रामसिया बन गमनसुनि लषणकीन्ह अनुमान॥
दहनौरा मग पगन को कला शेष की आन ८९

चौ० कनक बिंदु दो चारक देखे ।
राखे शीश सिया सम लेखे ।

दो० सुर मन उर रघुनाथ के बसत सियाके चित्त ॥
छै मासेबहुसोबरन सो उगलतहैं नित्त ६०
औरौ सकल अभारम्वहिं ब्रह्म दयो उपदेश ॥
नारद भाई आइकै कहि भामिनी सँदेश ६१
नीतिधरमकहिसेवकन मातसकलपरिवार ॥
मेरो कह्यो सुनाइयो अवगुण अवधि अधार ६२

चौ० भरत महा महिमा जल रासी ।
मुनि मतितीर ठाढ़ि अबलासी ॥

दो० भरतमहा महिमाअमित ज्यों सागरको नीर ॥
तहाँ मुनिन की मति थकी शेष शारदातीर ६३
शशिबदनी रजनीतजी बसी दगासी त्याग ॥
तुलसी भरत सुशीलगुण रामचरण अनुराग ६४
नहिं सीताको सत कठिन नहीं भरतको भाव ॥
नहींलषणसेवाकठिन नहिंमम निकसप्रभाव ६५
नामचतुरगुणपंचयुत द्विगुणितवसुहृतशेश ॥
रम्योराम सब जगतमें तुलसी पूरण लेश ६६
मिलतराहु जिमिचन्द्रमें असप्रसंग जबहोइ ॥
बिछुरै जरा कृशांगते मुकत दुहुंन की होइ ६७
साठ पांव सौ आगरे शिर सोरा चौबीस ॥
ताबिच हमको राखिये यहीबड़ी बकशीश ६८
नख दिक् दशन इकत्रकरि दिनएकादश टारि ॥

सदातासु बिचराखिये मायासहित खरारि ९९

चौ० भ्राता पिता पुत्र उरगारी।
पुरुषमनोहर निरखत नारी॥

दो० कै भ्राता कै सुत पिता जानत नहीं प्रभाव॥
मनअनुमानबनिशिचरीनिरखतलषणसुभाव १००

चौ० सीता सभय देखि रघुराई।
कह्यो लषण सों सैन बुझाई॥

दो० रघुबर चितये बाणतन पुनिप्रभु चितै अकाश॥
अनुज राम मनकी लखी ठाढ़ेभये हुलास १०१
अँगुरिन बात बताय कै चितये तबै अकाश॥
लक्ष्मणतुरत निपातकियो काटीश्रुतिअरुनाश १०२

चौ० उभय प्रकार दुहूं दिशि मरणा।
तब ताक्यसि रघुनायक शरणा॥

दो० तबमरीच अनुमानकिय इहिमारै म्वहिंनीच॥
स्वइरघुपतिको शरणतकि हरषिलल्यो खचनीच १०३
क्रोधवंत तब रावण लीन्ह्यसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर भयरथ हाँकि न जाइ॥
आधोजेठ अमावस सियाहरी दशशीश॥
सातघरी दिन चढ़तही ताकीसाख गिरीश १०४
निजसीता रहिमाइकै छायहरी दशशीश॥
तुलसी पूरीत्रियाकी करनगई अभिषीश १०५
अविरलभक्ति मांगिबर गीधगयो निजधाम।
त्यहिकीक्रिया यथोचित निजकर कीन्हीराम॥

स्वंभूमनुको शीश तब अरु रानीको व्यापु ॥
लख्योजटायू काँखतहँ उड़िआयो तबआपु १०६
अनिलजोर घन संगहै आनन न्हाये दोइ ॥
तुलसी छूटै शीश तब कहौ जटायू सोइ १०७
महीं रहौं तुम संगमें करिहौं सेवा जान ॥
तुलसीमन इच्छाभई मोहिं मिलैं भगवान १०८
विष्णुकह्योतबनृपतिसों माँगो तुमबरदान ॥
पुलकिउठे द्वउ तुरतही तुमसे पुत्रहि दान १०६
दयोविष्णु बरदानयह और न दूसरकोइ ॥
स्वंभूमनु तुव गेहमें हमहीं अइहैं सोइ ११०
तबै जटायू या कही मोहिं कछू महराज ॥
दशरथके सुत होहुगो पञ्चबटी तवकाज १११
गयो विष्णु सुरलोकको देहतजी बहुराज ॥
तुलसी ते दशरथ भये अवधपुरी शिरताज ११२
गयोजटायु सुमेरुपर बसतरह्यो तिहिठांव ॥
तुलसीनिज मनमेंरहै जपति रामको नांव ११३
सुरपतिसोंजब युद्धभइ और अवधके राज ॥
रथबिचलत जान्योंतबै आइ जटायू काज ११४
लैकर गयो सुमेरुपर राजहि कियो सचेत ॥
तब दशरथ चीन्हों वहै कहो मित्रका हेत ११५
अवधपुरी रथलैगयो राजहि कहि यहबात ॥
रामचन्द्र अवतार मैं पञ्चबटी बन जात ११६
क्रियाकरी बहु गीधकी पितुते दशगुणराम ॥

तुलसिदासगीधहिदयो मुनिकोदुर्ल्लभधाम ११७
राजा बड़े जो इन्द्र हैं देव रहत है पास ॥
तुलसी मति अभिमानकी गुरुकी पाईशाप ११८
चौ० मास दिवस तहँ रह्यों खरारी।
निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
बालिहिहतिमोहिंमारिहिआई।
शिला द्वार दै चल्यों पराई ॥
दो० पयसमरुधिर जोबालिको सोइदयंत बखान॥
तबतिहिंमनअनुमानकरि दीन्हींशिलापरान११९
बज्र शिला द्वारे दई देखि भयो सन्देह ॥
निकसगुपति गोदावरी बालिगयो निजगेह १२०
चौ० अङ्गद कहा जाउँ मैं पारा।
मनसंशयकछुफिरतीबारा ॥
दो० अङ्गद कह्यो सकोच यह तुरत जावँमैं पार ॥
सुधि आवै ऋषि शापकी संशय फिरतीबार १२१
चौ० मसक समान रूप कपि धरी।
लङ्का चल्यो सुमिरि नरहरी ॥
दो० शैवरूप हनुमान ने धरो लङ्कमें जाइ।
अन्तरिच्छमुदरीगई परीसियाकेपाइ १२२
चौ० कुबलय बिपिन कुंतबन सरिसा।
बारिद तपति तेल जनु बरिसा ॥
दो० जैसे हिमऋतु कमल में परत तुषार बिचार ॥
प्रातहोत बारिधितपति सूखिजातसबझार १२३

पवनपुत्र पहुँचे जहां बैठी बन सिय माय ॥
त्रिजटाआई भवनको प्रगटभयो कपिराय १२४
सकल कथा बहु संगकी कही सियहि समुझाइ ॥
तुलली छूट्यो शोच तब राममुद्रिका पायइ १२५

चौ० मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा।
जैसे रघुनायक म्वहिं दीन्हा ॥

दो० लंका दाही पवनसुत आये पूंछ बुझाय ॥
देहु मातु कछुचीन्ह तुम जैसो रामपठाय १२६
तब सीता सुमिरन करो निज सीताको ध्यान ॥
तुलसी तब आयो तहां चूड़ामणि बहुजान १२७
जोसम्पति शिव रावणहि दीन्ह दिये दशमाथ ॥
सो सम्पदा विभीषणै सकुचिदीन्ह रघुनाथ॥१२८
कीन्ही अर्ज्ज विभीषणै लंक दई भगवान ॥
ये दोनों बाहिर रहे सीता पुहुप बिमान १२९

चौ० रावणको दीज्यो यह पाती।
लक्ष्मण वचनमान कुलघाती ॥

दो० तेरे सुतके बधनको हों आयो हों शेश ॥
आदि शक्ति जिनकी हरी आयो अवधनरेश १३०

चौ० लिंग थापि बिधिवत करि पूजा।
शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा ॥

दो० पवनपुत्रको बोलिकर कही सकल रघुबीर ॥
लंका जाहु तात तुम यज्ञ काज रणधीर १३१
रामचन्द्र पद सुमिरिकै गयो महाबल हेत ॥

रावणसों तबयाकही चलहु सो सिया समेत १३२
सीताके मन शोचभा तब कपि लीन्हबुलाइ ॥
कही कथा सब रामकी तब रथपर धरपाइ १३३
हांक्यो रथ तब सारथी आयो सागर तीर ॥
देखिकटक अवधेशकर तबभयो सुखदशरीर १३४
कीन्हयज्ञ जब वेदबिधि भये परिपूरणकाम ॥
तुलसी फिर रथपर सजो देखहु लंकाधाम १३५
कीन्ह यज्ञ जो आपनी सुनो कोशलाधीश ॥
अब कछु मो कहँ चाहिये लंकदेहु बकशीश १३६
लंका दई विभीषणै तुमहिं देत सुरलोक ॥
तुलसी कछुदिन बीचमें देवन करौ बिशोक १३७
मैं अनेक अवगुण करे जानत हे जगतीत ॥
जनकसुता तबदेउँगो जबम्वहिं रणमेंजीत १३८
याकहि रावण तुरतही गयो सो अपनेधाम ॥
रामकटक सब उतरिकै गयोकीन्ह बिश्राम १३९
चौ० शाखामृगकी यह प्रभुताई।
शाखा ते शाखा पर जाई ॥
दो० गइ मुदरी वहिपारलै मणिल्याई यहिपार ॥
राक्षस मारे रिपु दहे सो सब कृपा तुम्हार १४०
कोट कँगूरन चढ़िगये कोटि कोटि रणधीर ॥
हेम कोट पहिले बनो फिर तामें को कोट ॥
लोह कोट छत्री लरैं धरैं कोट की ओट १४१
छुवत चरण पङ्कज तुरत देवी गई पताल ॥

चरणछुवाजब पवनसुत सेनकहो समुझाइ ॥
राम कला कछु होतहै मात पतालै जाइ १४२
समरमहारथतें बिरथ कियोसुलक्ष्मण वीर ॥
तब धावा बहु क्रोध करि मेघनाद रणधीर ॥
विषमजखमलखि लषणको विलपतजीवनकाज ॥
दीनबंधुकी लखिदशा क्रोधभयो कपिराज १४३
बीरघातिनी घातकी सुनो संत हनुमान ॥
उदय अकाज सुहोतहै यतनकरी लष आन १४४
ब्याकुल बंधु विलोकि कै शोचत श्रीरघुवीर ॥
हृदय खंभारल पवनसुत बोल्योगिरागँभीर १४५
सरसों कूटों अगिनि में सुनो संत रघुवीर ॥
मूर सजीवन ल्याइहौं गदगद भयो शरीर १४६
रामचरण शिरनाइकै जौलों पलकपरैन ॥
सुग्रीवहि समुझाइ कै चल्यो सजीवन लैन १४७
कालरूप बहुकालको रुधिर पियत है नित्त ॥
दुशमनताको जानिकै हनो पवनसुत चित्त १४८
कालरूप है कालको कालहु ते विकराल ॥
ताकोप्रभुजोप्रकटकिय महाकालकपिकाल १४९
जाइ अवधपुर पवनसुत बाणीकही अकाश ॥
शकती बेध लषणहैं रवि न करै परकाश १५०
महाराय रणघोरलंकपर शपथ कोशलाधीश ॥
नाममात्रनिजकहतभरतसोंगायोजनचालीश॥१५१
गिरिसबदेखोबिबिधिविधि जरनपरैपहिचान ॥

रामचंद्रपद सुमिरिकै लियोउखारिहनुमान १५२
सोरह योजन चकरखौ दशयोजन बहुऊंच ॥
सो हिमलीन्हांपवनसुत जिमिकोरीकोकूंच १५३
बारबार सियपद सुमिरि बारबार भगवान ॥
लषणचरणपुनि सुमिरिकै चलोसुदर्शन बान १५४
शीतलगैतब अगिनितप प्यासलगै तबनीर ॥
अब चुप साधि रहे हौ विपति बटावनवीर १५५
प्रातहोत रण नित चढ़ौ रावण सौं बलवीर ॥
तुलसोबिना सुमित्रसुत कौनचलावै तीर १५६
भरतवेध हनुमानको गिरोसोकपि अतिदूर ॥
रामराम सुमिरत गिरो गिरिरोप्यौ लंगूर १५७
मैं धोखे इक भान के बान बेधियो तात ॥
मोरचूक रघुबीर सों कह्यो न कबहूं भ्रात १५८
अवधपुरी शिरनाइकै भरतहि कीन्हप्रणाम ॥
गिरिसम्हारिकैपवनसुतकीन्हघरिकविश्राम १५९
कपि तब पूंछी बारबहु बिधे युद्ध ये राम ॥
लषणविरोध सोजानिकै सोना कंचनधाम १६०
जैसे चूक जुजड़नकी होत बड़न को माफ ॥
भरतवंध हनुमान को सोना कहौ सँताप १६१
गिरिदेखौ बहुकरनपर ठाढ़िभरत को तीर ॥
पराकरम सबसमुझिकै मनविहँसे रघुवीर १६२
पाइ सजीवन बैदने कीन्हो तुरत उपाइ ॥
उठि बैठे लक्ष्मण तबै रामसुकंठ लगाइ १६३

निजजननीको सुमिरिकपि धर्मरहै जिमिमोर ॥
चलै पवन जब वदमुख लीन्ही पवन बहोर १६४

चौ० उलटानाम जपतजगजाना।
वालमीक भये ब्रह्म समाना॥

दो० एक बीस बधपाप यहि भरी तुम्हारी देह ॥
महि मारौ तौ ना मरै तुलसी चरण सनेह १६५
पांच भुजा कैलास को दै पठये रघुवीर ॥
दशदश हृदय गयाल को पाँच सिंधुके तीर १६६
चोला छांड़ो स्वयंभुमनु देवन धरो उठाइ ॥
जबहिनिपातै लंकपति दशरथ प्रहिरै आइ १६७
रहीदरशकी लालसा राम लषण सियनेह ॥
आये रणकी भूमि में स्वयंभु मनु की देह १६८
तुलसीकहतपुकारिकैचितसुनिहितकरभान ॥
हेमदान गजदानते बड़ो दान सनमान १६९
तुलसी या संसार में पंचरतन हैं सार ॥
साधुमिलनअरुहरिभजनदियादानउपकार१७०
और बराती से लगै जहँ लग नाम अपार ॥
दुलहा दुलही से लगै एक रकार मकार १७१
तुलसी रा के कहतही निकसै सबै विकार ॥
फिर आवन को कहत है देत मकार किवार १७२

इतिश्रीगुसाईंतुलसीदासकृतविजय
दोहावली संपूर्णम् ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
चित्र चन्द्रिका	ज्ञानमाला	अमर विनोद	मुहूर्त्त दीपक
बारहमासा बलदेव प्र॰	गोपीचन्द भरतरी	वैद्य जीवन	बृहज्जातक सटीक
मनोहर लहरी	कथा श्री गंगा जी	औषधि संग्रह कल्पक	जातकालंकार
गंगा लहरी	अवध यात्रा	अमृत सागर बड़ा व छो॰	जातकाभरण
यमुना लहरी	भरतरी गीत	वैद्य मनोत्सव	होरा मकरन्द
जगद् विनोद	दानलीला वनागलीला	हिल्लगन	मुहूर्त्त मार्तण्ड सटीक
शृंगार बत्तीसी	दोहावली रत्नावली	**ज्योतिष भाषा**	**संस्कृत उर्दू टीका**
राग	गोकर्ण माहात्म्य	जातक चन्द्रिका	मनुस्मृति
राग प्रकाश	श्री गोपाल सहस्रना॰	जातकालंकार	वसुहारीत
लावनी	कथा सत्यनारायण॰	दैवज्ञ भरण	महिम्न स्तोत्र
क़िस्सा वग़ैरह	सटीक	ज्ञान स्वरोदय	घतार्क
नानार्थ नौ संग्रहावली	हनूमान बाहुक	रमल सार	याज्ञवल्क्य स्मृति
ब्रह्मसार	जनक पचीसी	रमल नौ रत्न	**संस्कृत भाषा टीका**
शिव सिंह सरोज	हरिहर सगुण निर्गु-	इन्द्रजाल	अमरकोष तीनों कांड
भक्तमाल	ण पदावली	**संस्कृत की पुस्तकें**	याज्ञवल्क्य स्मृति
इन्द्रसभा	वनयात्रा	लघुकौमुदी	सन्ध्या पद्धति
विक्रम विलास	कायस्थ वर्ण निर्णय	सिद्धान्त चन्द्रिका	व्रतार्क
बैताल पचीसी	विहार वृन्दावन	भाषा तत्त्व प्रकाश	भगवद्गीता टीका ह॰
सिंहासन बत्तीसी	समर विहार वृन्दावन	पंच महायज्ञ	भगवद्गीता टीका श्रा॰
पद्मावती खण्ड	कल्पभाष्य	निर्णय सिन्धु	गीत गोविन्द
शुकबहत्तरी	लक्ष्मी सरस्वती सम्वाद	संग्रह शिरोमणि	कथा सत्यनारायण
बकावली सुमन	**दरसी**	भगवद्गीता पंचरत्न	शार्ङ्गधर संहिता
चहार दरवेश		दुर्गापाठ मूल व स॰	पाराशरी सटीक
क़िस्सा हातमताई	अक्षरावली	विष्णु भागवत	परमार्थ सार
अपूर्व कथा	रूपस्बोध	कथा यम द्वितीया	शीघ्रबोध सटीक
क़िस्सा गुलसनोबर	ज्ञान चालीसी	अपराध भजन स्तोत्र	लघुजातक
सहस्र रजनी चरित्र	दोहावली	कायस्थ कुल भास्कर	षट्पञ्चाशिका
राबिन्सन का इतिहास	बालबोध	कायस्थ धर्म निरूपण	सामुद्रिक
सीता हरण	विद्यार्थी की प्रथम पु॰	तथा कोठा	गरुड़ पुराण
सती विलास	किताब अच्छी	मथुरा सभा	राम विवाहोत्सव
क़िस्सा मर्द औरत	गणित कामधेनु	**ज्योतिष**	**शरिश्ते तालीम की**
संगीत मल्लार	लीलावती		**पुस्तकें**
मुतफ़र्क़ात	पटवारियों की पुस्तक भा॰	मुहूर्त्त गणपति	**संस्कृत**
	वैद्यक भाषा	मुहूर्त्त चक्र दीपिका	
मर्नाश्वर की कथा	निघण्टु	मुहूर्त्त चिन्तामणि स॰	यजुपाठ २ भाग

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजुपाठ २ भाग	अवध देशीय भूगो-	पट्टाबख़्त कैथी	ध लगान १९ सन्
तथा ३ भाग	इंगलिस्तान का इति-	तथा क़बूलियत	१८६८ ई०
धात्वर्णव	हास	रजिस्टर दाख़िल-	पुख़्तादारी २९
नागरी कैथी	हितोपत्रिका	ख़ारिज़ तुलबा मदर्से	सन् १८६६ ईस-
	बाल भूषण	रजिस्टर हाज़िरी पा-	वी वग़ैरह०
वर्णमाला कैथी १ भा-	पद्य संग्रह	ठशाला	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
तथा २ भाग	भाषा काव्य संग्रह	क्षेत्रव्यवहारिक त-	वेज़ात १८ सन्
तथा कैथी फ़ारसी	कवित्त रत्नाकर १ भा-	त्त्व १ भाग	१८६९ ई०
नागरी	तथा २ भाग	तथा २ भाग	ऐक्ट ताल्लुक़ादारान्
हरूफ़ मुफ़र्दात	मंगल कोष	व्यौहार पत्र संग्रह-	मक़रूज़ अवध-
अक्षरारम्भ	अङ्क प्रकाश	कैथी	२४ सन् १८७० ई-
वर्णप्रकाशिका १ भा-	गणित प्रकाश १ भा-	**क़ानून कैथी**	सवी
तथा २ भाग	तथा २ व ३ व ४ भाग		ऐक्ट चौपायों का
सूरजपुर की कहानी	गणित क्रिया	पटवारियों के क़ायदे	मदाख़िलत बेजा
धर्मसिंह का वृत्तांत	क्षेत्र प्रकाश	उर्दू कैथी महाजनी	१ सन् १८७१ ई०
शिक्षावली	क्षेत्रचन्द्रिका १ भा-	टिकट के लाइसन्स	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबि-
शिशुबोध	तथा २ भाग	का ऐक्ट २ सन्	ता फ़ौजदारी १०
पत्र हितैषिणी	सकीलसायस	१८७८ ई०	सन् १८७२ ई०
पत्र दीपिका	रेखागणित १ भाग	**नागरी**	ऐक्ट माल गुज़ारी
विद्या चक्र	तथा २ भाग	ऐक्ट लगान मग़रबी	मग़रबी व शिमा-
विद्यांकुर	बीजगणित १ भाग	व शिमाली १० सन्	ली १९ सन् १८७३
पदार्थ विद्यासार	रामायण तुलसी-	१८५९ ई०	ईसवी
पदार्थ ज्ञान विटप	कृत	इण्डियन पिनल	तरमीम मजमूआ
भोज प्रबन्धसार	बालकाण्ड	कोर्ट	ज़ाबिता फ़ौजदारी
राजनीति	अयोध्या काण्ड	मजमूआ ज़ाबिता	११ सन् १८७४ ई०
भाषा लघुव्याकरण	आरण्य काण्ड	फ़ौजदारी ऐक्ट २५	तक़ावी के क़ायदे
१ भाग तथा २ भाग	किष्किन्धा काण्ड	सन् १८६१ ई०	सवाल व जवाब
भाषातत्त्वदीपिका	सुन्दर काण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	पुलीस
भाषा चन्द्रोदय	लंका काण्ड	सन् १८६६ ई०	अवध रुहेलखण्ड
भूगोल तत्त्व	उत्तरकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	रेलवे का दस्तूरुल
भूगोल दर्पण	गुटका १ भाग	१८६२ ई०	अमल
इतिहास तिमिरना-	तथा २ व ३ भाग	ऐक्ट स्टाम्प अदाल-	ऐक्ट १५ दीवानी -
शक १ भाग	हिदायतनामा मुद-	त २६ सन् १८६७	सन् १८८२ ई०
तथा २ भाग	रिसान्	ईसवी	इति
तथा ३ भाग	पशु चिकित्सा	मजमूआ ऐक्ट अव-	